सामाजिक बदलाव का माध्यम हैं कहानियाँ

महेश झरबड़े

कहानी सुनने-सुनाने का अपना एक अलग ही मज़ा है। गम्भीरता, धैर्य, लगन, मानवीकरण, विश्लेषण और समानुभूति जैसे पहलुओं को विकसित करने और फलने-फूलने के जिन मौलिक गुणों की बच्चों या वयस्कों से अपेक्षा की जाती है, कहानी सुनने-सुनाने की प्रक्रिया में वे स्वतः ही फलने-फूलने और विकसित होने लगते हैं।

कहानी का एक पहलू यह भी है कि कहानी सुनाने के बाद उसकी घटनाओं पर ठहरकर बातचीत की जाए और उस पर श्रोताओं की राय जानी जाए। इस दौरान श्रोताओं की तरफ से आई राय या तो उनके निजी अनुभव होते हैं, या कहानी का विश्लेषण, या फिर कहानी के किसी नए पहलू को खोलता एक सवाल।

कहानी से मुद्दा आधारित चर्चा

यूँ तो कहानियाँ हर किसी को पसन्द आती हैं पर यदि कहानी को आधार बनाकर किसी वर्ग-विशेष के साथ चर्चा करना हो तो उपयुक्त कहानी का चुनाव करना भी अनिवार्य हो जाता है।

मुस्कान संस्था द्वारा जिन बस्तियों में बच्चों को पढ़ाने का काम किया जाता है, वहाँ बच्चे और युवा साथ-साथ पढ़ते हैं। युवाओं की ज़रूरत, युवा मन, उनसे जुड़े मुद्दे और इस उम्र की चुनौतियों को देखते हुए किशोर-किशोरियों के साथ काम करना अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। जब संस्था स्तर पर युवा केन्द्रित शिक्षण कार्य की योजना बनी, तो कहानी की किताबों के ज़रिए मुद्दे आधारित चर्चा करना ज़्यादा उपयुक्त लगा।

युवाओं की सूची में 12 से 20 आयु के किशोर-किशोरियों के नाम थे। इनमें कुछ स्कूल की दहलीज़ से अनजान और कुछ स्कूल जाने वाले युवा भी शामिल थे। दो अलग पृष्ठभूमि से आए युवा समूहों का एक मंच पर साथ आकर अपनी राय रखना, सुनाई जा रही कहानी पर उनकी राय जानना, उस पर बात करते हुए नए विचारों का निर्माण करना तथा युवाओं की अभिव्यक्ति बढ़ाने में कहानी की भूमिका समझना – इस गतिविधि का प्रमुख उद्देश्य था।

चकमक के जून 2014 अंक में एक कहानी छपी थी – 'गाँव में कुछ बुरा होने वाला है'। इस कहानी का

उपयोग मैंने अलग-अलग समय पर अलग-अलग उम्र, जाति, समुदाय के लोगों के साथ किया है और हर बार कुछ नया सीखने-समझने को मिला। कहानी के माध्यम से ऐसी कुछ चर्चाएँ निकलीं जिन्होंने बहुत-सी धारणाओं, मान्यताओं और रीति-रिवाज़ों पर चर्चा के अवसर खोले और कहीं-कहीं कुछ मान्यताओं को तोड़कर नवीन विचारों का सूत्रपात भी किया।

कहानी सुनने के प्रति श्रोताओं की दिलचस्पी कैसे बढ़ाई जाए? क्या सवाल पूछे जाएँ जिससे उनके निजी अनुभव निकलकर सामने आएँ? जो मुद्दे उभरे, उनपर कैसे चर्चा आगे बढ़े? उनकी समझ कैसे और पुख्ता हो पाए? इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए उक्त कहानी के सन्दर्भ में इस युवा समूह के साथ चर्चाओं के सफर की दास्तान कुछ ऐसी रही।

सुनने-सुनाने का माहौल बनाने और कहानी सुनने की उत्सुकता बढ़ाने की मंशा से कहानी सुनाने से पहले एक साझा सवाल पूछा गया था - "किसी गाँव में एक घटना हुई और लोग अपना गाँव छोड़कर चले गए,

ऐसा क्या हुआ होगा उस गाँव में?"

युवाओं की तरफ से जवाब आए-

- "गाँव में बाढ़ आ गई होगी।"
- "सरकार ने कहा होगा कि गाँव खाली कर दो, फैक्ट्री लगेगी।"
- "भूकम्प आ गया होगा।"
- "गाँव में आग लग गई होगी" आदि।

जब युवाओं की तरफ से यह बात आई कि आग लग गई होगी तो एक नया सवाल पूछा गया, "क्या ऐसा हो सकता है कि किसी गाँव के लोग खुद ही अपने घर में आग लगा दें?" इस सवाल ने चर्चा को और गम्भीरता के साथ आगे बढ़ाया। चर्चा के दौरान बात यहाँ आकर रुक गई कि गाँव में ज़रूर भूत-प्रेत का साया होगा। सब इससे सहमत नहीं थे पर ज़्यादातर का मत यही था।

इसके बाद कहानी सुनाई गई। सबको यह जानने की उत्सुकता भी थी कि उन्होंने जो कहा, उनमें से कौन-सी बात सही थी इसीलिए कहानी सुनाने के दौरान शान्ति बनी रही।

कहानी का सारांश

एक गाँव में बहुत-से परिवारों के बीच एक परिवार में एक बुज़ुर्ग अम्मा रहती है, एक दिन सुबह-सुबह वह आसमान की तरफ देखकर कहती है, "मुझे ऐसा लग रहा है कि गाँव में कुछ बुरा होने वाला है।" ये बात सुनकर उसके दो पोते मुस्कुराकर, उसकी बात का मज़ाक बनाकर खेलने चले जाते हैं। उसका एक पोता पूल गेम खेलता है और अन्तिम बाज़ी हार जाता है। ज़्यादातर वह विजयी ही होता था। उसके दोस्त पूछते हैं, "आज कैसे हार गया?" वह बताता है कि "आज सुबह-सुबह दादी ने कहा था कि गाँव में कुछ बुरा होने वाला है। मेरे मन में यही बात चल रही थी, शायद इसीलिए निशाना चूक गया।"

जीता हुआ लड़का घर जाकर अपनी माँ को बताता है कि उसने ज़्यादातर विजयी होने वाले लड़के को हरा दिया है क्योंकि उसकी दादी ने कहा कि आज गाँव में कुछ बुरा होने वाला है, और वह हार गया।

विजयी लड़के की माँ अपने बेटे की जीत से खुश होती है, पर साथ ही अपने बेटे को समझाती है कि बुज़ुर्गों की बातों का मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए, उनकी बातों में सच्चाई होती है।

कुछ समय बाद विजयी बच्चे की माँ चिकन लेने जाती है और चिकन वाला कहता है, "सुना है गाँव में आज कुछ बुरा होने वाला है।" महिला 'हाँ' में जवाब देती है और एक पाउंड चिकन का ऑर्डर देती है और बाद में दो पाउंड चिकन लेकर जाती है, यह कहकर कि "पता नहीं क्या बुरा होने वाला है, पर कुछ बुरा होने से पहले पेटभर चिकन खाया जा सकता है।"

उसके बाद जो भी चिकन की दुकान पर जाता है, ऑर्डर से ज़्यादा चिकन ले जाता है। दुकानदार का सारा चिकन खत्म हो जाता है। वो दूसरी जगह से चिकन मँगाता है और वो भी खत्म हो जाता है। वह सबको बताता है कि गाँव में कुछ बुरा होने वाला है इसलिए अमुक महिला ऑर्डर का दुगना चिकन ले गई है।

कुछ ही समय में खबर गाँव में जंगल की आग की तरह फैल जाती है, और गाँव के लोग तपती दोपहर में गाँव के चौपाल पर इकट्ठे होकर चर्चा करने लगते हैं। तभी एक इन्सान इशारा करके कहता है, "देखो उस चिड़िया को, इतनी तपती दोपहर में, वो उस खम्भे पर क्यों बैठी है जबकि पास में हरा-भरा पेड़ भी है। इसका क्या मतलब है?" हालाँकि वो चिड़िया रोज़ ही उस खम्भे पर बैठती है पर आज लोगों का ध्यान उस पर जाता है, लोग शंकित हो जाते हैं। तभी एक इन्सान कहता है, "तुम रहो इसी गाँव में और अपनी दुर्दशा देखो, मैं तो चला ये गाँव छोड़कर।"

उसके बाद सभी परिवार एक-एक करके बैलगाड़ी में अपना-अपना सामान लादकर गाँव से निकलने लगते हैं। रास्ते में जाते हुए किसी को खयाल आता है कि हम गाँव में नहीं रहे और कुछ बुरा हुआ तो उसका साया हमारे घरों पर पड़ जाएगा। जब हम या कोई और उस घर में आएगा तो वह साया उसे सताएगा। कोई परेशान न हो इसलिए ज़रूरी है कि घर ही न रहे इसलिए घर में आग लगा दें और यही सोचकर वह अपने घर में आग लगा देता है। फिर बारी-बारी सब लोग अपने घरों को आग के हवाले करने लगते हैं। गाँव के बहुत-से घर धूँ-धूँ कर जलने लगते हैं। तभी बूढ़ी दादी घर से बाहर निकलती है और आसमान की तरफ देखकर कहती है, "मैंने कहा था न, गाँव में आज कुछ बुरा होने वाला है।" और कहानी समाप्त हो जाती है।

सामाजिक मान्यताओं पर चर्चा

कहानी के समापन के बाद चर्चा शुरू हुई, "क्या सचमुच गाँव में कुछ बुरा होने वाला था?"

एक स्वर में आवाज़ आई, "नहीं।"

"तो ऐसा क्यों हुआ?"

"क्योंकि सब गाँववालों ने बुढ़िया की बात मान ली थी।"

किसी ने कहा, "बुढ़िया ने तो जा-जाकर किसी से नहीं कहा था, वो तो गाँववालों ने ही बात फैला दी।"

"तो क्या गाँववालों ने बात मान ली इसलिए ऐसा हुआ?"

तस्वीर ने जोड़ा, "भैया मानने से कुछ नहीं होता, हम भी बहुत सारी बातें मानते हैं पर सिर्फ मानने से ही वो बात सही नहीं हो जाती। गाँव वाले डर गए थे, इसीलिए उन्होंने ऐसा कदम उठाया।"

इस बात पर चर्चा के बाद सबकी सहमति बनी कि हम बहुत बार किसी काम को तभी अंजाम देते हैं जब उसे नहीं करने पर कुछ बुरा होने का डर रहता है। इसमें यह बात भी जोड़ी गई कि डर के साथ-साथ हमारा विश्वास भी होता है कि ऐसा न करने से कुछ अच्छा या बुरा होगा ही होगा, तभी हम ऐसा करते हैं। इस पर समूह में बैठे सभी युवाओं की सहमति थी।

युवाओं की दिलचस्पी को देखते हुए उनसे पूछा गया, "क्या अपनी निजी और सामाजिक ज़िन्दगी में भी ऐसी बातें हैं जिनकी सच्चाई हमें नहीं पता लेकिन उस बात पर हम और हमारा समाज भरोसा करता है?" कुछ सोचते हुए गौतम ने कहा, "हाँ, जैसे बिल्ली रास्ता काट दे तो सफर नहीं करते, अपशकुन होता है।"

इसके बाद तो इस तरह की मान्यताएँ एक-एक कर बाहर आने लगीं। समाज में प्रचलित ये मान्यताएँ सूचीबद्ध हो जाएँ, इस लिहाज़ से युवाओं को अलग-अलग समूहों में बाँटकर मान्यताओं की सूची बनाने को कहा गया।

टीम से जो मान्यताएँ निकलकर आईं, वो निम्नांकित हैं।

- यदि घर के दरवाज़े पर चप्पल उल्टी पड़ी है, तो घर में लड़ाई होती है।
- रात में दर्पण दिखने से चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं।
- रात में नमक देने से कर्ज़ा बढ़ता है, लड़ाई होती है।
- रात में सिलाई करने से आँख भी सिलने लगती है।
- गर्भवती महिला भटा (बैंगन) खाती है तो पैदा होने वाला बच्चा काला होता है।
- बिल्ली के घूरने से अशुभ घटना घटती है।
- जाते समय कोई छींक दे तो जो काम करने जाते हैं, वो नहीं होता।
- चंगेष्टे खेलने से कमाई नहीं होती है।
- चपेटे खेलने से बारिश होती है।
- बाल खोलने से भूत लगता है।
- रात को झाड़ू नहीं लगाते, लक्ष्मी नहीं आती, निकल जाती है।
- घर की चौखट पर बैठने से कर्ज़ा बढ़ता है।
- हथेली खुजलाती है तो पैसे आते हैं।
- खाली झूला झुलाने से बच्चे का पेट दुखता है।
- तकिए पर बैठने से सर दुखता है।
- कोयले से लिखने से कर्ज़ा बढ़ता है।

- हथेली पर नमक लेने से कर्ज़ा बढ़ता है।
- हल्दी लगाकर रात में घूमने से भूत लग जाता है।
- जिसकी जीभ में तिल हो, उसकी बात सच होती है। उसको काली ज़ुबान का कहते हैं।
- सौ पाप करने से बिच्छू काटता है।
- खाली डिब्बा ले जाना अशुभ माना जाता है।
- कौवे के चिल्लाने से मेहमान आते हैं।
- रात में कुत्ता रोता है, तो किसी की मौत होती है।
- शनिवार के दिन तेल का गिरना शुभ माना जाता है।
- घर के बाहर गुलमोहर का पेड़ हो तो उस घर में लड़ाई चलती रहती है।
- फूटा दर्पण देखने से किस्मत फूट जाती है।
- विधवा औरत बच्चों को हाथ लगाए तो बच्चे बीमार हो जाते हैं।
- जिस पीपल के पेड़ में कील गड़ी हो, उसमें भूत रहते हैं।
- पंचक के दिनों में कोई मरता है तो साथ में पाँच लोगों को लेकर जाता है।
- जिसके कटे हुए बाल फेंक दिए जाएँ, वह पागल हो जाता है।
- किसी की इच्छा पूरी नहीं हुई और वह मर जाए तो उसकी आत्मा भटकती रहती है।
- काले रंग के कपड़े अशुभ होते हैं।
- कोई शुभ काम करना हो तो तीन लोग नहीं होना चाहिए। 'तीन तिगाड़ा काम बिगाड़ा' हो जाता है इत्यादि।

इस तरह मान्यताओं की एक लम्बी फेहरिस्त समूह से निकलकर आई। इन मान्यताओं में पेड़-पौधों से जुड़ी, सप्ताह के किसी खास दिन से जुड़ी, लेन-देन से जुड़ी, खाने-पीने से जुड़ी और इन्सानों के व्यवहारों से जुड़ी कुछ मान्यताएँ स्पष्ट रूप से समझ आ रही थीं। जाने-अनजाने ये सभी मान्यताएँ हरेक समाज के सामाजिक ढाँचे में विद्यमान हैं और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी-न-किसी को प्रभावित ज़रूर करती हैं।

हमारी बोलचाल में तो आए दिन कुछ-न-कुछ सुनने को मिल ही जाता है। और कई बार हमारे व्यवहार में यह दिख भी जाता है।

मान्यताएँ: सच या भ्रम?

मान्यताओं में कितनी सच्चाई होती है? ये जिस स्वरूप में शुरू होती हैं, पलती-बढ़ती हैं, उनका स्वरूप वही रहता है या बदल जाता है? यह सब समझने के लिए ज़रूरी था कि कुछ चुनी हुई मान्यताओं पर रुककर चर्चा की जाए। इस सोच को ध्यान में रखकर 'रात में कुत्ता रोता है तो किसी की मौत होती है' मान्यता चुनी गई और उस पर तार्किकता के साथ बात करना तय हुआ। मान्यताओं से जुड़ी बातें युवा समझ पाएँ और

ज़रूरत पड़ने पर किसी और को अपने अन्दाज़ में समझा भी पाएँ, इस बात को ध्यान में रखते हुए कुछ सवाल-जवाब, कुछ उदाहरण व गतिविधियों के माध्यम से चर्चाएँ हुईं।

"ये मान्यता कितनी पुरानी है? कितने साल पहले यह बात कही गई होगी?" इन सवालों से चर्चा शुरू हुई।

"मैंने तो अपने पापा से सुनी थी, पापा ने उनके पापा से सुनी होगी और उनके पापा ने उनके पापा से।" चर्चा और आपसी सवाल-जवाब से यह समझ बन रही थी कि आज जिन बातों पर हमारा पक्का भरोसा है, दरअसल वो बातें कम-से-कम कई सौ साल या उससे भी ज़्यादा पुरानी हैं।

फिर एक गतिविधि की गई जिसका नाम था 'काना-फूसी गतिविधि'। कागज़ पर लिखा गया, 'आज से डरना बन्द है' जिसे एक युवा को पढ़वाया। उसने जो पढ़ा, वो अपने साथी के कान में कहा। उसने अगले के कान में और अगले ने अगले के कान में...अन्तिम व्यक्ति ने ज़ोर-से कहा, "आज से डर भाग गया, बन्दर हो गया है।"

इस पर चर्चा से यह समझ बनी कि बहुत बार ऐसा भी होता है कि

हम किसी बात को ठीक-से सुन नहीं पाते और बात का मतलब बदल जाता है। इस पर भी चर्चा हुई कि जो बात थोड़ी देर पहले कही गई है, वो पहले इन्सान से 20वें इन्सान तक पहुँचते-पहुँचते अपने वास्तविक रूप से काफी भिन्न हो गई है। ठीक इसी तरह मान्यताएँ भी तो कई लोगों से होते हुए हम तक पहुँची हैं, तो क्या यहाँ भी मुख्य बात के बदलने की सम्भावना नहीं है?

युवाओं की तरफ से आए जवाब तार्किक थे इसलिए इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए उनसे चर्चा हुई। "इसका मतलब जो बात आज सही है, वो कल बदल सकती है, परसों कुछ और हो सकती है?"

"हाँ," सबने एक साथ कहा। "तो क्या कई सौ साल पहले कही गई कोई बात, आज तक वैसी-की-वैसी रह सकती है?"

समूह में शान्ति थी और मन में विचारों का संघर्ष। "सोचो," कहकर सवाल यहीं छोड़ दिया गया।

कई सौ साल वाली बात और काना-फूसी गतिविधि का ध्यान दिलाकर हम अपनी चुनी हुई मान्यता 'रात में कुत्ता रोता है तो किसी की मौत होती है' पर वापिस लौट आए। सबकी सहमति से बात आगे बढ़ी।

"कुत्ते के रोने के क्या कारण हो सकते हैं?"

जवाब आए...

"हो सकता है कुत्ता बीमार हो, उसे कोई तकलीफ हो।"

"कुत्ते को कहीं चोट लगी हो।"

"उसे अपना कोई साथी याद आ रहा हो।"

"उसे भूख लगी हो।"

"उसे ठण्ड लग रही हो, गर्मी या बारिश से वो परेशान हो।"

"कुत्ता अपनी परेशानी के कारण रोए तो दूसरा कोई व्यक्ति कैसे मर सकता है?"

इस पर एक युवा साथी ने बताया, "हमारे गाँव से एक बार एक भैया बाइक से निकले थे और ट्रक से उनकी टक्कर हो गई थी और वे मर गए। गाँव के लोग कहते हैं कि उस दिन भी कुत्ता रोया था।"

जवाब बाकी युवाओं ने दिया, "हो सकता है ट्रक वाला स्पीड में हो या बाइक भी स्पीड में हो।"

"गाड़ी का ब्रेक भी कमज़ोर हो सकता है। ध्यान कहीं और होगा इसलिए भी दुर्घटना हो सकती है।"

"रास्ते में कहीं गड्ढा हो सकता है जिससे गाड़ी बहक गई हो।"

"हो सकता है, दोनों में से कोई नशे में हो और गाड़ी सम्भाल नहीं पाया हो।"

अन्य कारण भी हो सकते हैं, इस पर युवा साथियों की सहमति थी।

एक अन्य युवा ने जोड़ा, "भैया, यदि कुत्तों के रोने से लोग मरते हैं

तो ट्रेन-दुर्घटना के समय कितने कुत्ते रोते होंगे?" एक अन्य साथी ने कहा, "और जब सब कुत्ते मुँह ऊपर करके रोते होंगे, तब हवाई दुर्घटना होती है क्या?" दूसरे ने कहा, "और यदि किसी गाँव/शहर में कुत्ते ही नहीं होंगे तो क्या वहाँ कभी भी कोई नहीं मरेगा?" एक अन्य युवा ने एक नई बात कही, "यदि कुत्तों के रोने से मरना तय होता तो फिर तो हर गाँव में कुत्ते का एक मन्दिर होता और उसकी पूजा भी होती, लेकिन ऐसा नहीं होता क्योंकि यह बात ही झूठ है।"

"हाँ, हमको भी यही लगता है," बाकी साथियों ने भी सहमति जताई।

इस तरह 'रात में कुत्ता रोता है तो किसी की मौत होती है' वाली मान्यता पर चर्चा के दौरान युवाओं के विचारों में काफी बदलाव आता दिख रहा था।

चर्चाओं ने बदला नज़रिया

चर्चाएँ बढ़ेंगी और युवाओं का नज़रिया थोड़ा बदलेगा, ये तो मेरे मन में था पर बात को इस नज़रिए से भी देखा जा सकता है, यह मैंने बिलकुल नहीं सोचा था।

इस पूरी बातचीत से युवाओं के मन में मान्यताओं को लेकर जो पक्कापन या डर था, वो खत्म हो गया है, यह तो हम नहीं कह सकते, पर उस पर पड़ी धूल हटाने में यह चर्चा बहुत कारगर रही है। मान्यताओं पर चर्चा करने के और भी रास्ते हो सकते हैं परन्तु इन पर चर्चा के पहले, कहानी से जो माहौल बनता है, उससे बात करने के रास्ते बहुत आसान हो जाते हैं। दूसरा, यदि कहानी पढ़कर यूँ ही छोड़ दी जाए तो अन्य सब कहानियों की तरह ही, यह भी एक कहानी ही रह जाती है। पर यदि इस पर ठहरकर चर्चा की जाए तो यह विश्वास के कई मुद्दों को टटोलने, उन पर बहस करने और रूढ़िवादी विचारों को झकझोरने का एक बहुत ही सशक्त माध्यम बन जाती है।

महेश झरबड़े: पिछले 11 साल, *मुस्कान* संस्था के साथ स्कूली और आदिवासी बच्चों की शिक्षा से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर काम किया है। वर्तमान में *सिनर्जी* संस्थान, हरदा के साथ जुड़कर ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा और युवाओं के मुद्दों को समझ रहे हैं।

सभी चित्र: पूजा के. मैनन: वर्तमान में कम्यूनिकेशन डिज़ाइन की छात्रा हैं। जन्म पलक्कड़, केरल में हुआ लेकिन एक जगह से दूसरी जगह यात्रा करने के कारण बहुत-से नए लोगों से मिलना हुआ। चूँकि वे अन्यथा बातचीत करने में झिझकती थीं, स्केचिंग ने उनके विचारों को सम्प्रेषित करने और टिप्पणियों का दस्तावेज़करण करने में एक माध्यम का काम किया। धीरे-धीरे रेखाचित्र कहानियों में बदल गए जिन्होंने उन्हें जीवन और लोगों को समझने और खुद को व्यक्त करने में मदद की।